श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

શ્રી કૃષ્ણ પ્રણામી ધર્મ પત્રિકા

अक्तूबर २००९

वर्ष ८१ | श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर | अंक १०

www.krishnapranami.org

श्री प्राणनाथ प्राकट्य महोत्सवान्तर्गत हुए ३१२ पारायणका शुभारंभ करते हुए
पू.आचार्य महाराजश्री एवं संतजन

श्री प्राणनाथ प्राकट्य महोत्सवमें निकाली गई शोभायात्राकी मनोरम झांकी

श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

वि.सं : २०६६ | निजानन्दाब्द : ४२८ | बुद्धजी शाके : ३३२

वर्ष ८१ | अक्तूबर २००९ | अंक १०

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामित्व } जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

मुद्रण एवं प्रकाशन स्थल } श्री ५ नवतनपुरी धाम, खीजड़ा मन्दिर
जामनगर - ३६१ ००१ (गुजरात) भारत

सम्पादक (मानद्) : डॉ. प्रवीण चन्द्र परीख

सम्पादक मण्डल : शास्त्री श्री लक्ष्मण चैतन्य तथा श्री कनकराय व्यास

वार्षिक शुल्क रु. १००/- | १५ वर्षीय शुल्क रु. १०००/-

पता : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर ३६१ ००१
फोन : (०२८८) २६७ २८२९ फेक्स (०२८८) २५५ १३५३
E-mail : navtan@sancharnet.in, navtanpuri@gmail.com
website : www.krishnapranami.org/www.krishnadham.org

दीपावलीकी शुभकामना

आप सभीको दीपावलीकी मंगल कामनायें।

दीपावलीका यह पावन पर्व आपके जीवनमें सुख समृद्धि एवं ऐश्वर्य लेकर आये जिससे पूर्णब्रह्म परमात्माकी ओर आपका प्रेम बढ़े एवं आप इसी जीवनमें आनन्दका अनुभव कर सकें।

सुखसमृद्धिमैश्वर्यं ददातु दीपमालिके ।
सर्वे निरामया सन्तु एषैव शुभ कामना ।।

आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

मेहेर सागर

पूज्य पाद् जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

(गतांक पृष्ठ ८ से आगे.......)

पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजीकी असीम अनुकम्पा ब्रह्मात्माओं पर होती है । श्री प्राणनाथजी इस बातको स्पष्ट कर रहे हैं,

ए मेहेर मोमिनों पर, एही खासल खास उमत ।
दई मेहेरें भिस्त सबन को, सो मेहेर मोमिनों बरकत ॥ ३५

यह कृपा विशेषरूपसे ब्रह्मात्माओं पर होती है क्योंकि उनका समुदाय सर्वश्रेष्ठ आत्माओंका समुदाय (खासल खास उमत) है । हे ब्रह्मात्माओ ! श्री राजजीकी कृपाका यह सामर्थ्य है कि इसके प्रतापसे तुमने नश्वर जगतके जीवोंको अखण्ड मुक्तिस्थलका सुख प्रदान किया है ।

ए मेहेर मोमिनों पर.......श्री राजजीकी असीम कृपा ब्रह्मात्माओं पर होती है। यथार्थतः श्री राजजीकी असीम कृपाका अनुभव ब्रह्मात्माएँ ही कर सकती हैं क्योंकि वे सर्वश्रेष्ठ आत्माएँ हैं। इस जगतमें आकर नश्वर तन धारण करनेवाली आत्माओंमें ब्रह्मात्माओंका समुदाय सर्वश्रेष्ठ आत्माओंका समुदाय है । उनका सीधा सम्बन्ध अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्मासे है । वे पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजीकी असीम अनुकम्पाका अनुभव कर सकती हैं। यह क्षमता उनको ही प्राप्त है ।

दई मेहेरें भिस्त सबनको........श्री राजजीकी असीम अनुकम्पाके द्वारा ही ब्रह्मात्माओंको यह क्षमता प्राप्त हुई है कि वे नश्वर जगतके जीवोंको भी अखण्ड मुक्ति स्थलमें मुक्ति दिला सकती हैं । सर्वप्रथम श्री राजजीकी कृपाके कारण ब्रह्मात्माओंको नश्वर जगतका खेल देखनेका लाभ प्राप्त हुआ । तदनन्तर उनको नश्वर जगतके जीवोंको अखण्ड मुक्ति देनेका अधिकार प्राप्त हुआ । यह सम्पूर्ण क्षमता श्री राजजीकी अपार कृपामें समायी हुई है। यह कृपा ब्रह्मात्माओंको सीधी प्राप्त है ।

इसी कृपाका प्रताप समझाते हुए आगे और कह रहे हैं,

मेहेरें खेल देख्या मोमिनों, मेहेरें आए तलें कदम ।
मेहेरें क्यामत कर के, मेहेरें हंस के मिले खसम ॥ ३६

श्री राजजीकी असीम अनुकम्पासे ही ब्रह्मात्माओंने यह खेल देखा है। इसी कृपाके कारण वे इस खेलमें भी श्री राजजीके चरणोंमें आई हैं। अब वे इसी कृपाके कारण जागृत होकर हंसती हुई अपने धनीसे मिलेंगी।

मेहेरें खेल देख्या मोमिनों.......श्री राजजीकी कृपाने ही ब्रह्मात्माओंको नश्वर जगतका खेल दिखाया है। अन्यथा अखण्ड धाममें रहनेवाली ब्रह्मात्माएँ वहाँपर रहते हुए नश्वर जगतका खेल कैसे देख सकती ? अखण्डमें नश्वरताकी उपस्थिति संभव ही नहीं होती है। किन्तु श्री राजजीकी कृपाने इस असंभवको भी संभव बनाया है। उसने ब्रह्मात्माओंकी सुरता (मनोवृत्ति)को उनसे हटाकर नश्वर जगतके खेलमें लगाया और उसी सुरताके द्वारा नश्वर जगतके सुख दुःखका अनुभव करवाया। अन्यथा अखण्ड परमधाममें प्रेमके अतिरिक्त अन्य कोई अनुभव संभव नहीं है। श्री राजजीकी कृपाने ही ब्रह्मात्माओंको उनकी सुरताके द्वारा खेल दिखा कर खेलमें सुखदुःखका अनुभव करवाते हुए श्री राजजीके प्रेमका महत्त्व अधिक समझाया। इसीलिए कहा गया है कि श्री राजजीकी असीम कृपासे ही ब्रह्मात्माओंने अखण्ड परमधाममें रहते हुए भी नश्वर जगतका खेल देखा।

मेहेरें आए तलें कदम.........नश्वर जगतका खेल देखते हुए भी ब्रह्मात्माएँ तारतम ज्ञानके द्वारा जागृत होकर खेलमें भी श्री राजजीके चरणोंमें एकत्रित हुई अर्थात् नश्वर खेल देखते हुए भी वे मोहमायाके वशमें होकर श्री राजजीसे दूर नहीं हुई अपितु तारतम ज्ञान प्राप्त कर श्री राजजीके चरणोंमें एकत्रित हुई। यह सब श्री राजजीकी असीम कृपाका ही प्रताप है।

मेहेरें क्यामत करके........अब श्री राजजीकी असीम कृपाके द्वारा वे तारतम ज्ञान प्राप्त कर माया मोहमें भी जागृत रहेंगी और जब श्री राजजी उन्हें परमधाममें उनके मूल तन परआत्मामें जागृत करेंगे तब वे जागृत होकर अपने धनीसे मिलेंगी। यद्यपि वे श्री राजजीके चरणोंमें ही रहकर मायाका खेल देखती हैं किन्तु माया मोहके कारण उन्हें श्री राजजीके चरणोंमें रहनेका अनुभव नहीं होता है। जिससे वे स्वयंको श्री राजजीसे दूर समझती हैं। जब वे अपने मूल तन परआत्मामें जागृत होंगी तब उन्हें श्री राजजीसे मिलते हुए ऐसा अनुभव होगा कि

हम अभी तक श्री राजजीसे विछुड़ गए थे । अभी हम अपने धनीसे मिल रहे हैं । तब वे हंसती हुई अपने धनीसे मिलेंगी । यह सब श्री राजजीकी कृपाका ही फल है ।

आगामी दो चौपाइयोंके द्वारा श्री राजजीकी असीम कृपाकी अनिर्वचनीयता समझा रहे हैं,

मेहेर की बातें तो कहूँ, जो मेहेर को होवे पार ।
मेहेरें हक न्यामत सब मापी, मेहेरें मेहेर को नाही सुमार ॥ ३७

श्री राजजीकी कृपाका यदि कोई पारावार होता तो मैं इसके विषयमें अवश्य कुछ कहता । इसी कृपाने परमधामकी अखण्ड संपादाओंका निरूपण किया है किन्तु इसका स्वयंका निरूपण होना सम्भव नहीं है ।

मेहेर की बातें तो कहूं........महामति श्री प्राणनाथजी यहाँपर श्री राजजीकी असीम अनुकम्पाकी अनिर्वचनीयता समझाते हुए कह रहे हैं, यदि इस कृपाका कोई पारावार होता तो मैं इसके विषयमें कुछ कह पाता । इसका तो कोई पारावार ही नहीं है। यथार्थतः कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जो श्री राजजीकी कृपाका पार पा सके। अनेकों आत्माओंने श्री राजजीकी कृपाका अनुभव किया किन्तु किसीने भी उसका पार नहीं पाया । इस प्रकार यह कृपा अनीर्वचनीय है ।

मेहेरें हक न्यामत सब मापी........वास्तवमें श्री राजजीकी असीम कृपा ही परमधामकी अखण्ड सम्पदाओंका निरूपण कर सकती है । क्योंकि सभी सम्पदाओंमें यह कृपा सर्वोपरि है इसका कोई पारावार नहीं है । परमधामकी सम्पदाओंका निरूपण होना सम्भव ही नहीं होता है । इन सम्पदाओंका निरूपण ही किस प्रकार किया जाय ? श्री राजजीकी कृपाको ही यह शोभा प्राप्त है कि वह इन सम्पदाओंका निरूपण कर सकती है। श्री राजजीकी कृपाके द्वारा परमधामकी इन सम्पदाओंका निरूपण तो हो जाएगा किन्तु कृपाका स्वयंका निरूपण तो कृपाके द्वारा भी सम्भव नहीं है। यह कृपा दूसरी सम्पदाओंका निरूपण कर सकती है किन्तु स्वयंका नहीं । इसलिए इसका कोई पारावार नहीं है ।

जो मेहेर ठाडी रहे, तो मेहेर मापी जाए ।
मेहेर पल में बढ़े कोट गुनी, सो क्यों मेहेरें मेहेर मपाए ॥ ३८

यदि यह कृपा थोड़े समयके लिए स्थिर हो जाती तब इसे मापा जा

सकता । यह तो पलमात्रमें करोड़ों गुणा बढ़ जाती है इसलिए इसे कैसे मापा जा सकता है ?

जो मेहेर ठाडी रहे.......श्री राजजीकी कृपा निरन्तर बढ़ती ही रहती है। कृपाकी वर्षा होती है तो उसकी तीव्रता निरन्तर बनी रहती है । इसलिए इसको मापना कठिन हो जाता है। यदि यह थोड़े क्षणोंके लिए स्थिर हो जाए तभी इसका निरूपण सम्भव होगा। इसका तो स्वभाव ही पल पल बढ़नेका है इसलिए इसका निरूपण असम्भव हो जाता है ।

मेहेर पलमें बढ़े कोट गुनी.......यह कृपा पल पलमें करोड़ों गुना बढ़ जाती है। प्रतिपल बढ़ते रहना इसका स्वभाव है इसलिए इसका निरूपण सम्भव नहीं है। यद्यपि यह कृपा परमधामकी सभी सम्पदाओंका निरूपण कर लेती है किन्तु यह स्वयंका निरूपण नहीं कर सकती है। अत एव कृपाको पारावार रहित बताया गया है । हमें अन्तर आत्मासे इसका अनुभव करना है और अन्तर्दृष्टिसे इसके दर्शन करने हैं।

कृपाका महत्त्व और अधिक समझाते हुए कहते हैं,

मेहेरें दिल अरस किया, दिल मोमिन मेहेर सागर ।
हक मेहेर ले बैठे दिल में, देखो मोमिनों मेहेर कादर ॥ ३९

श्री राजजीकी कृपाने ही ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमधाम बनाया । अब उनके हृदयमें कृपाका यह अथाह सागर उमड़ने लगा । स्वयं श्री राजजी अपनी कृपाको लेकर उनके हृदयमें विराजमान हो गए हैं। हे ब्रह्मात्माओ ! श्री राजजीकी कृपाके सामर्थ्यको तो देखो ।

मेहेरें दिल अरस किया.......श्री राजजी जहाँपर विराजमान हैं वह परमधाम है । श्री राजजीकी असीम कृपाने ब्रह्मात्माओंके हृदयको श्री राजजीके विराजमान होने योग्य बना दिया । इसलिए ब्रह्मात्माओंके हृदयको यहाँ पर परमधाम कहा गया है। ब्रह्मात्माओंने खेलमें नश्वर तन धारण किया है जो प्राकृत पाँच तत्त्व और तीन गुणोंका होनेसे विकारी माना जाता है। ऐसे विकारी शरीरके हृदयमें श्री राजजीका विराजमान होना सम्भव नहीं होता है क्योंकि श्री राजजी स्वयं निर्विकार हैं (निर्विकारं सनातनम्) । किन्तु श्री राजजीकी कृपासे ब्रह्मात्माओंको नश्वर खेलमें भी तारतम ज्ञान प्राप्त हुआ जिससे उनका हृदय निर्मल बना और उन्हें

श्री राजजीकी पहचान हुई। साथमें उन्हें प्रेमलक्षणा भक्ति प्राप्त हुई जिससे श्री राजजी उनके हृदयमें विराजमान हो गए। श्री राजजीकी कृपाने ही विकारी शरीरके हृदयको निर्विकार बनाकर उसे श्री राजजीके विराजमान होने योग्य बना दिया। श्री राजजीके विराजमान होनेपर ब्रह्मात्माओंका हृदय परमधाम बन गया। इस प्रकार श्री राजजीकी कृपाने ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमधाम बना दिया।

दिल मोमिन मेहेर सागर.....श्री राजजीके विराजमान होनेपर ब्रह्मात्माओंके हृदयमें कृपाका सागर उमड़ने लगता है। श्री राजजी स्वयं कृपाके सागर हैं। वे जब ब्रह्मात्माओंके हृदयमें विराजमान होते हैं तब उसमें कृपाकी लहरें हिलोरे लेने लगती हैं। उनका हृदय मानों कृपाका सागर बन जाता हो उस प्रकार लहराता है।

हक मेहेर ले बैठे दिलमें..........श्री राजजी जब ब्रह्मात्माओंके हृदयमें विराजमान होते हैं उस समय वे अपनी कृपाको भी साथमें ही लेकर विराजमान होते हैं। वे स्वयं कृपाके सागर हैं। इसलिए ब्रह्मात्माओंका हृदय कृपाका सागर बन जाता है। श्री राजजीकी कृपा उनके हृदयमें रहती है अतः श्री राजजी जहाँ विराजमान होते हैं वहाँपर वह स्वतः आ जाती है।

देखो मोमिनों मेहेर कादर.......श्री राजजीकी कृपा ही ब्रह्मात्माओंके हृदयको श्री राजजीके विराजमान होने योग्य बना देती है। श्री राजजी जहाँ विराजमान होते हैं उसे परमधाम कहा जाता है। इसलिए ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमधाम कहा गया है। श्री राजजीकी कृपामें ही यह सामर्थ्य है कि वह नश्वर तनके हृदयको परमधाम बना सकती है। कृपाके इस सामर्थ्यको समझनेके लिए महामति ब्रह्मात्माओंको आह्वान करते हैं।

कृपाका महत्त्व और दर्शाते हुए कह रहे हैं,

बात बड़ी है मेहेर की, हक के दिल का प्यार।
सो जाने दिल हक का, या मेहेर जाने मेहेर को सुमार॥ ४०

कृपाकी तो बात ही निराली है। यह तो श्री राजजीके हृदयका प्रेम है। इसे उनका हृदय ही जानता है या स्वयं कृपा ही कृपाका निरूपण कर सकती है।

बात बड़ी है मेहेर की........श्री राजजीकी कृपा नश्वर जगतकी सभी वस्तुओंसे तो निराली ही है किन्तु परमधामकी अन्य सभी सम्पदाओंसे भी विशिष्ट

है। क्योंकि यह श्री राजजीके हृदयका प्रेम है। जिसका स्थान श्री राजजीका हृदय हो और जो श्री राजजीके प्रेमका स्वरूप हो ऐसी कृपाके विषयमें कहा ही क्या जा सकता है। वह तो सभी सम्पदाओंसे विशिष्ट है।

सो जाने दिल हककका..........श्री राजजीके हृदयके प्रेम स्वरूप कृपाको स्वयं श्री राजजी जानते हैं या उनकी कृपा जानती है। अन्यथा इस कृपाको समझना बड़ा कठिन है। कृपाका स्थान उनका हृदय है इसलिए वह इसे समझ सकता है। जिस प्रकार श्री राजजीके किसी भी अंगको मापा नहीं जा सकता है उसी प्रकार उनकी कृपाको भी कभी मापा नहीं जा सकता है। स्वयं श्री राजजीका हृदय या उनकी कृपा ही इस कृपाको यथार्थतः समझ सकती है।

(क्रमश........)

नवतन काव्य

नि–न्दामें मत व्यय करो, काल बनेगा काल।
जा–ओ धर्मके मर्ममें, प्रभुका नेह विशाल॥
न–र नवतन हो जाये तब, जब हो कृष्ण प्रणाम।
न्–यारी भक्ती पाईये, श्यामा श्यामको धाम॥
द–या यादसे कर चलो, लाभ भला हो काम।
जी–वन सुखमय हो सदा, महामति अभिराम॥
म–न में ले संकल्प कर, प्राणनाथके काम।
हा–थ गहेंगे कृष्णमणि, नाम सूत्र तू थाम॥
रा–जित जीवनमें सदा, तारतम्य गुणगान।
ज–ग जगमग हो जायेगा, खुश होंगे भगवान॥
की–र्त तीर्थ सतकर्म है, कर, तू बने महान।
ज–गे, जगाये विश्वमें, सर्वधर्म सम्मान॥
य–ज्ञाहुति दे अहं की, बनजा ब्रह्म समान।

चित्रबन्ध काव्य परंपरागत नामाक्षर काव्यांजलि सहित सप्रेम प्रणाम

डॉ. राजेश्वर आचार्य 'प्रभावरंग'– वाराणसी

नामकी महिमा तथा उसका स्वरूप

ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धर्मदासजी महाराज
श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर

प्रेमी पाठकगण ! नाम महिमा और नामके स्वरूपका रहस्य वस्तुतः अनन्त, अपार और असीम होनेसे उसका यथार्थ वर्णन करना अथवा एक बार नामके लेनेसे ही कितना फल मिलता है, एवं किस नाममें अनन्त शक्ति है और किस नाममें थोड़ी शक्ति है तो किसको किस प्रकार जपा जाय, यह सब गुरुगम्य और अनुभव द्वारा प्राप्त करनेकी वस्तु होनेसे लेख द्वारा उसके यथार्थ स्वरूपकी माप तौल, प्रमाण एवं महत्ता इयत्ता बता सकना मनुष्यके तो क्या देवशक्तिके भी बाहरकी बात है । कारण,

वेदहू भेद नहीं पावें, सदा श्रुति नेति करि गावें ।
न जाने शेष और शंकर, नाथ महिमा तुमारी हो ।।

एक ही पुरुषके द्वारा लिया गया एक ही नाम कभी तो दशगुणा फल देता है तो कभी सहस्त्रगुणा तो कभी अनन्त गुणा फलप्रद बन जाता है तो कभी बहुत थोड़ा फल देता है । कभी मुक्ति प्रदान करता हैं तो कभी भुक्ति प्रदान करता है एवं कभी मुक्ति-भुक्ति दोनों ही फल एक ही बारमें प्राप्त हो जाते हैं । प्रभुका नाम कभी व्यर्थ नहीं जाता, इतना और भी ध्यानमें रख लेना होगा कि नाम भेदके कारण स्वरूप भेद और स्वरूप भेदके कारण फल भेदका होना स्वाभाविक है तो कभी अज्ञानवश कुछका कुछ भजन भी हो जाया करता है अतएव उसके नाना स्वरूप और नाना फल पाये जाते हैं । इसके कारण भी अनेक हैं । परिस्थिति और बोधके कारण भी अनेक रूपमें परिणमित हो जाता है । तो कभी ध्याता, ध्येय और ध्यानकी विपरीततासे फल भी कुछका कुछ मिल जाता है । अत एव महात्मा पुरुष कहा करते हैं,

नाम पढ़ा तिन सब पढ़ा, सब मंत्रनको भेद ।
नाम बिना खाली गये, पढ़ पढ़ चारों वेद ।।

वस्तुतः परब्रह्मका नाम ऐसी ही वस्तु है कि उसको यथार्थ पढ़ लिया जाये तो सब कुछ पढ़ लिया गया हो जाएगा । मगर उसके स्वरूपको, उसके महत्वको

नहीं जाना तो जीवन खाली जाएगा चला । **'वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः'** सम्पूर्ण वेदोंके पढ़नेका तात्पर्य तो ब्रह्मके स्वरूपको यथार्थ जानना ही है । यदि वही न जाना गया तो पढ़ना पढ़ाना सब कुछ व्यर्थ हो जाता है । वेदमन्त्रके पढ़नेका ध्येय तो प्रभु प्राप्ति ही माना गया और उसमें ही सन्देह रह गया अथवा कुछका कुछ मान बैठे तो खाली जाना तो प्रत्यक्ष ही देखनेमें आ रहा है अतः वेदमें लिखा है,

यस्तन्न वेद किं ऋचा करिष्यति (ऋग्वेद)

जो ब्रह्मतत्त्वको, उसके स्वरूपको नहीं जान सका तो वेद मन्त्र लेकर क्या करेगा ? अर्थात् कुछ नहीं । नामके फलमें इस प्रकार जमीन आसमानका अन्तर क्यों पड़ा करता है ? इसके अनेक कारण होते हुए भी मुख्यतः तीन कारण हैं । नाम लेनेवाले या जाप करनेवाले पुरुषकी तल्लीनता, तन्मयभावना और नाम शक्तिका यथार्थ ज्ञान ।

ये तीनों बातें जितने अंश तक उत्तम और विशुद्ध होंगी और जितने अंश तक हम उन्हें प्राप्त कर लेते हैं उतनी ही सफलता हमें प्राप्त हो जाती है । नाम लिया गया उपाधिवाला और भावना नित्य वस्तुकी है एवं नाम लिया अध्यस्त देवका और विशेषण लगा दिये गये निर्गुण देवके तो फलमें अन्तर अवश्यमेव पड़ जायेगा । क्योंकि ध्याता, ध्यान और ध्येय भिन्न हो जानेसे फलमें बाधा पड़ सकती है । गजेन्द्र मोक्षके समय ऐसा ही प्रसंग बना था । नाम किसीका और विशेषण किसीके–निदान कोई भी देव रक्षार्थ न आ सके । जब इस भूलको सुधारा गया तभी भगवान आये और तत्काल रक्षा कर दी ।

नाम लिया पूर्णब्रह्मका और भावनामें मायाका रंग चढ़ा है या चाहते हैं भुक्ति और मांगते है मुक्ति तो भी नाम जापका फल जितना चाहिये उतना नहीं मिल सकता । नाम भी लेते जा रहे हैं परमधामको ध्यानमें रखना चाहिये परन्तु ध्यानमें नाना प्रकारके संकल्प विकल्प उठने लगे तो सब गुड़ गोबर हो जाएगा । उच्च आसन पर बैठके गौरव बतानेके लिये नाम जाप चालु है, दूसरी ओर अन्य बातें भी साथमें होती जा रही हैं एवं अपने अन्दर अहंभाव भी है कि हम ऐसे हैं, तो फिर नाम जाप बहुत थोड़ी कीमत प्रदान करेगा अथवा नहीं भी करे । क्योंकि हमने जो कुछ किया वह साबित नहीं हुआ । हमारे सामने चार दरवाजे आड़े आ गये । अब हम ध्यानके द्वारा उस आनन्दके अधिकारी नहीं रहे ।

जिस प्रकार गुलाब जामुन या जलेबी बना कर उसे शक्करकी चासनीमें डुबाया जाता है परन्तु यदि कोई उसे नमकके पानीमें डुबादे तो सब मजा किरकिरा हो जायेगा । क्योंकि उस अपने ध्येयका ध्यान नहीं रखा, इसलिए परिणाम प्रतिकूलतामें जा पहुँचा ।

इस प्रकार पूर्णब्रह्म अक्षरातीतके ध्यानमें या नाम जापमें सच्चिदानन्दमय स्वरूपका स्मरण रहना चाहिये परन्तु हम ध्यानमें बैठे हुए हैं और आ गया प्रणाम करनेवाला, या मायाके व्यवहार सम्बन्धी कोई बात आ गयी किंवा हमारे मनकी चंचलताने हमें मायाकी ओर ले जा पटका तो हमारा वह नाम जाप नमकके पानीमें जा पड़ी जलेबीके समान व्यर्थ हो जाएगा, उसका फल यथेष्ट नहीं मिल सकेगा । देखनेको परिश्रम किया, कुछ दूर तक क्रिया कलाप भी ठीक रखा परन्तु अन्तमें जाकर अज्ञानसे या मनकी चंचलताने हमें कहींका कहीं जा पटका, भावना बदल गई, चासनी नमकीन हो गई सब करा कराया बेकार हो गया । इसलिये महामति आज्ञा करते हैं कि,

छिपके साहेब कीजे याद, खासल खास नजीकी स्वाद ।
बडी द्वा माहें छिपके ल्याए, सब गिरोहसों करे छिपाए ॥

(क्या. ब. १५/१)

नाम जापके साथ नामीका ध्यान, नामीके स्वरूपका ध्यान उदात्त भावनाके साथ रखना चाहिये । वह भी एकान्तमें अथवा हृदयकी मौन भूमिकामें छिपाकर, न कि दिखावके लिए आडम्बरके साथ । क्योंकि आडम्बर ध्यानमें, भजनमें, अहंभावका पोषक हो जाता है । इसलिये नाम जप करनेवालेको उक्त दोषोंसे बचना चाहिये ।

भजन पूजनमें, नाममें अथवा जपके समय आडम्बर, डौल, इधर उधरकी बातें और मनकी चंचलता बढ़ाने वाले जगतके व्यवहारोंका त्याग ही विशेष लाभप्रद होता है ।

परमात्माके पास पहुँच कर अथवा तो प्रभुको अपने हृदय मन्दिरमें पधराकर ब्रह्मानन्दतक पहुँचनेकी इच्छा है तो अपनेको छिपाना सीखो, एकान्तमें पाठ पूजा करो यह दिखावकी वस्तु नहीं है । पासमें पहुँचे विना ब्रह्मानन्दकी झलक नहीं मिलती और उसको प्राप्त किये बिना भजन अधूरा रह जाता है ।

प्रभुको अपने सामने उपस्थित सा मानकर अपनेको तुच्छ और अकिंचन भावसे अश्रुबिन्दु पूर्ण नेत्रोंसे प्रार्थना करना सीखो तो अपनेको तत्काल निर्मल पाओगे। परन्तु प्रेमके पात्र बनना होगा। बिना पात्र वस्तु ठहरती नहीं है।

निशदिन ग्रहिये प्रेमसों, श्री युगल स्वरूपके चरन।
निर्मल होना याहिसों, और धाम वरनन ।।

श्री युगल स्वरूप श्री राजश्यामाजीके चरणोंको प्रेमसे अपने हृदयमें पधरा कर देखो कितनी शक्ति, शान्ति और सन्तोष प्राप्त होता है। प्रेम भी एक अवस्थामें ही आता है। जिस प्रकार निद्राके विना स्वप्न नहीं बन पाती, उसी प्रकार प्रेमके पात्र बने विना प्रभुका आसन हृदयमें नहीं जमता। इसके लिये भूमिका बनाना होगा। योग्य गुरुदेवके चरणोंकी रजको धारण करना पड़ेगा तब कहीं प्रेमका मार्ग समझमें आयेगा। केवल प्रेम–प्रेम चिल्लानेसे प्रेम नहीं मिलता किन्तु उसके लिये तो,

वचने कामस धोई नाखिये, राखिये नहीं रजमात्र।
जोगवाई सर्वे जीतिये, त्यारे थैये प्रेमना पात्र ।।

कृपालु और तत्त्वज्ञ गुरुदेवके वचनोंको यथार्थ समझिये तब कहीं बोध भावना जाग्रत होगी। जब जाग्रत शब्दोंके और स्वप्नके शब्दोंका भेद मिल जाये तब कामस अशुभ संस्कार, वर्ज्य कर्म और पापपुंज इन सबका त्याग बनता है। यदि ऐसा न किया गया और शब्दके बल पर मनमाना अर्थ सीख लिया तो सात्विक भावनाका लोप हो जायेगा और तामसी बुद्धिका उदय हो जाए। परिणाम यह होगा कि स्वार्थ ही परमार्थ भासने लगेगा और परमार्थके प्रति अश्रद्धा हो जायेगी। तब तो '**अधर्मं धर्ममिति वा मन्यते तमासावृतः**' अधर्म धर्म लगेगा और धर्मको ले नहीं पायेंगे। अत एव श्रीजी कहते हैं कि आत्मदर्शी पुरुषके वचनोंके द्वारा कामस धोकर निर्मल बनो, जरा मात्र भी अपने अन्दर कामस न रहने दो, एवं उसके अनन्तर अपनी तरफ खींचने वाले मायिक पदार्थोंकी ओर प्रेम, खिचाव किंवा आसक्तिको भी जीत लो तब कहीं प्रेमके पात्र बना जा सकता है। प्रेमका पात्र बनना बड़ी टेढ़ी खीर है इसको स्वार्थान्ध नहीं खा सकते।

जब मायाके मूल्यवान् पदार्थोंको देखकर प्रसन्नता न हो, उनके लिये संग्रह करनेकी या प्राप्त करनेकी इच्छा स्वाभाविक न हो, अर्थ और काम दोनोंको जीत

लिया जाय अथवा तुच्छ भावनाके उदयने उन्हें ठुकरा दिया तब समझो कि जोगबाई हमने जीत ली और अब प्रेमके पात्र बन सकेंगे हैं। है भी यथार्थ एक पात्रमें ठूँस ठूँसके ठसाठस गोंद भरा है या मोम भरा है। अब जब तक उसे खाली न किया जावे या उसको अलग न कर दिया जावे तब तक उसे दूधका पात्र किस प्रकार बनाया जा सकेगा ? इसी प्रकार जब तक दिलमें रुपयोंका, ऐश्वर्यका माया–मोह प्रतिष्ठा मान मर्यादा रूपी गोंद या मोंम भरा है। उसमें प्रेमरूपी दूध किस प्रकार समायेगा। इसलिये प्रेमका पात्र बनना है तो अपने अन्तःकरणसे प्राकृत पदार्थोंके मोहको निकाल फेंको। फिर देखो प्रेम कितना लबालब भरने लगेगा है। क्योंकि प्रेमदर्शन तो बहुत कठिन है।

प्रेम ही परमात्माका अंग है। जब प्रेम आ गया तो बाकी क्या रहा। परन्तु प्रेम बहुत दूर और बहुत अन्दरमें रहता है। उसके आड़े चार द्वार हैं। जो चारों द्वारोंको जान कर खोल डाले तो प्रेम तक पहुँच सके। नरसी भगतने बहुत कुछ दौड़ की, हाथ जल गया, मसाल ही देखते रह गये प्रेम न पी सके क्योंकि चार दरवाजे खोले बिना प्रेमकी तिजोरी मिलती नहीं और अखण्ड खजाना प्रेमकी तिजारीमें छिपा है। जब तिजोरी मिले, ताला खुले तब कहीं प्रेम प्राप्त हो।

प्रथम तो मनुष्य नाम जपका प्रेमी पात्र ही नहीं बन पाता। कदाच बने भी तो नामके निज स्वरूपको समझे बिना, मुख्य गौणका मिश्रण–मिलावट हमें वास्तविक तत्त्वसे दूर लेकर पटक देती है। सृष्टि रचनाके पश्चात् जितने नाम रखे गये हैं वे उपाधिजन्य हैं। उनसे नित्य मुक्तिकी प्राप्ति होना कठिन है। जो नाम रूपके कारण रखे गये अथवा अध्यस्त हैं वे स्वतः नष्ट हो जावेंगे जैसे नारायण शब्द है। जलमें निवास होनेके कारण नारायण नाम पड़ा है।

आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नर सूनवः ।
ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः ॥

(मनु० अ० १ श्लोक १०)

नरसे उत्पन्न होनेके कारण नार नाम जलका है और जलमें प्रथम ही निवास किया इसलिये आदिपुरुषको नारायण कहने लगे। बस, नारायण उपाधि वाला नाम है अत एव नित्य मुक्ति प्रदान करनेकी क्षमता नहीं रखता है। उस पर भगवानने एक और दफा धारा लगा दी कि,

अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च ।

जो कुछ हूँ वह मैं ही हूँ। जो भावनाको, यज्ञको मुझमें समर्पण करेंगे उन्हें आवागमन रहित स्थान प्राप्त होगा । जो इस बातको नहीं जानेंगे या नहीं मानेंगे उनका पतन होगा। वे नश्वर फल तो पा सकेंगे, नित्य नहीं। कदाच मुझे भजते हुए अन्य नामोंको भी जपते रहे या मेरेमें और अन्य देवोंमें अभेद मानकर भक्ति की तो भी उनकी भक्ति अविधिपूर्वक हो जायेगी और यथार्थ फल न मिलेगा। ऐसी अवस्थामें नाम जपकी समस्या भी बड़ी जटिल, कठिन बन जाती है। इसके सिवा कृष्ण भी एक नहीं । भगवान विष्णु भी कृष्णस्वरूपमें आये, गोलोकी नाथ श्री कृष्णजी भी यहाँ राधिकाजी सहित आये और लीलाएँ की एवं परात्पर पूर्णब्रह्म श्री कृष्णजी भी व्रजभूमिमें पधारे । यथा,

वसुदेव गृहे साक्षाज्जनिष्ये पुरुषः परः (भाग. १०–१)
अथाहमंशभागेन देवक्यां शुशुभे शुभे । (भाग. १०–२)
पूर्णब्रह्मस्वरूपोऽयं शिशुस्ते मायया महीम् ।
आगत्य भारहरणं कर्ता धात्रा च सेवितः ।
गोलोकनाथो भगवान् श्री कृष्णो राधिकापतिः ।
नारायणो यो वैकुण्ठे कमलाकान्त एव चः ।

(ब्रह्म वै० कृष्ण जन्म खण्ड)

साक्षात्कृष्णो व्रजे नित्यं स्वांशेनैव विहारिणः ।
तस्यांशो हि मथुरायां वासुदेवो जगद्गुरुः ॥
द्वारकायां ययौ विष्णु.....इत्यादि (सनत्कुमार सं.)
वासुदेव गोकुल ले चले, ताए ना कहिये अवतार ।
सो तो नहीं इन हदका, अखंड लीला है पार ॥ (श्री मुखवाणी)

इस प्रकार भागवतादि पुराण तीन स्थानोंसे आये हुए भिन्न भिन्न स्वरूपोंका समावेश श्री कृष्णजीके कलेवरमें बता रहे हैं । भगवान स्वयं वैकुण्ठ धाममें योगमायाको भेजते हुए आदेश देते हैं कि मैं अंशरूपसे वसुदेव देवकीके यहां प्रगट होऊँगा, तुम नन्दपत्नी यशोदाके यहां प्रगट हो जाना । वही भगवान देवोंके प्रति

उपदेश देते हैं कि श्री वसुदेवजीके यहां साक्षात् पूर्ण ब्रह्म परमात्माका प्रादुर्भाव होने वाला है उनकी सेवाके लिये तुम सब स्त्रियों सहित वहां पर जाकर तन धारण करो। ब्रह्मवैवर्तमें श्री गर्गमुनिका कथन है कि हे यशोदे ! तुमारे बालकको तुम साधारण न समझना। इसमें सभी विभूति एकत्रित हैं। पूर्णब्रह्म स्वरूप इस शिशुके स्वरूपमें गोलोकनाथ भगवान श्री कृष्णजी भी हैं एवं वैकुणठनाथ नारायणजी भी आये हैं। अन्य अवतार और विभूति देव सम्पूर्ण इसमें वर्तमान हैं। सनत्कुमारजी कहते हैं कि व्रजमें लीला करने वाले साक्षात् सच्चिदानन्दस्वरूप हैं एवं मथुरामें जाने वाले गोलोकीनाथ भगवान वासुदेव हैं और उन्हींने कंसको मारा है नन्दनन्दनजीने नहीं जैसा कि '**कंसं जघान वासुदेवः श्रीकृष्णो नन्दसूर्नतु**' में साफ लिखा है । द्वारकापुरीमें जानेवाले भगवान विष्णु है।

व्रजलीलामें पूर्णब्रह्मका पूर्णरूपसे व्रज विहार है। मथुरामें जानेवाले अंशरूपसे गोलोकी नाथ हैं। द्वारकामें तो अंशांश अर्थात् ब्रह्मके अंशरूप विष्णु भगवान हैं। इस प्रकार श्री कृष्ण लीलामें त्रिविध और विविध लीलाभेद विद्यमान हैं। जिस लीलाके स्वरूपका चिन्तन करते हुए उसके भावके साथ श्री कृष्ण नाम लिया जायगा उसी धामकी प्राप्ति होगी। जिस स्वरूपकी आराधना करोगे उसीको प्राप्त होजाओगे। परन्तु इसमें भी तारतम्य है, भेद है। सगुणा स्वरूप श्री कृष्णकी भक्तिमें नवधा भक्ति ही विशेष फल देती है और गोलोकी नाथकी भक्तिके लिये सखीभाव अथवा वात्सल्यभाव प्रधान है। परन्तु परात्पर पूर्णब्रह्म स्वरूप श्री कृष्णकी भक्तिमें अनन्यता और पातिव्रत्य धर्मकी महिमा ही मुख्य है।

पातिव्रत्यमनन्यत्वं साधनं समुदाहृतम् ।

कदाच कोई भावुक अज्ञानवश अथवा अन्य किसी माया मोहके चक्करमें पड़ कर भक्ति व्यभिचारसे भजेगा तो फल प्राप्ति यथार्थ नहीं होगी।

व्यभिचारपरो धर्मः न मे तोषाय कल्पते

व्यभिचारी धर्मका अर्थ है विधिके विरुद्ध अथवा मनमानी भावना लेकर भजने लगना और शास्त्रकी अवज्ञा करना। इसलिये प्रत्येक भक्तका किंवा सन्तका कर्तव्य है कि वह अपने इष्ट देवको विशुद्ध भावना और शास्त्रकी आज्ञानुसार ही भजे। एवं योग्य गुरुके द्वारा अपनी उपासनाके स्वरूपको भलीभांति समझ

लेवे। यह नाम जपका रहस्य बताया है। कीर्तनमें अथवा गानेवाले भजनोंमें यह नियम नहीं लागू पड़ता। यह तो भजन करनेके नियम बताये गये हैं। कीर्तन करते समय तो गोपाल गिरधारी, वंशीवाले, नागनथैया आदि श्री कृष्णजीके नामोंको बोल बोल कर गाना ही होगा। हां, जो नाम ब्रह्मस्वरूप श्री कृष्णको लागू न पड़ते हों, अथवा व्रज भूमिकाकी लीलाके बाहरके हों उनका त्याग किया जा सकता है। क्योंकि उससे विष्णुभक्ति सिद्ध होती है तथापि भजन या आये सभी नामको गानेमें दोष नहीं है। श्री कृष्णकी उपासना दोनों ही बन सकती है। क्योंकि पूर्णब्रह्ममें परस्पर अनेक विरुद्ध धर्मोंका समावेश पाया जाता है अतः दोष नहीं लगता परन्तु वह गायनमें ही समझना और वह भी श्री कृष्णके उपाधि वाले नामोंकी ही छूट है अन्य विष्णु वाचक नाम तो विष्णु भक्तोंके लिये हैं। वह भी सब श्री कृष्णके रूपमें समाप्त होनेसे अब तो केवल एक श्री कृष्ण नाम ही विशेष महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि मुख्य नाम ही निजनाम हुआ करता है। यही नाम हमारा आराध्य है, यही उपास्य है, यही जपने योग्य है।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु सर्वे भवन्तु निरामयाः

निन्दासे निद्रा भली

एक बड़े लेखक एक प्रहर रात रहते ही उठकर समालोचना लिखा करते थे। एक दिन उनके पिताजीने पास आकर उनकी प्रशंसा की। उसे सुनकर वे गर्वसे फूल गये और बोले कि 'आपके दूसरे लड़के तो अबतक नींदमें ही पड़े सो रहे हैं, वे भी मेरी तरहसे किया करें तो उनकी भी इज्जत हो।' पिताने उदास होकर कहा, बेटा ! रातके तीसरे पहर जगकर इस प्रकार अपनी शेखी बढ़ाने और दूसरोंकी निन्दा करनेकी अपेक्षा तो गहरी नींदमें सोए रहना ही उत्तम है।

• दीपावली विशेष •

आईये इस पावन अवसर पर संकल्प करें :

पिवना तमाखु छोडदो, मांस मछली सब।
सराब और सब कैफ, परदारा चोरी न कब॥

(समाचार दर्पण)

श्री ५ नवतनपुरी धाममें आयोजित

श्री प्राणनाथ प्राकट्य महोत्सव-२००९

श्री तारतम सागरके ३१३ पारायण तथा ३१३ राजभोग

सुन्दरसाथजी, हम सभी श्री कृष्ण प्रणामी धर्मकी आचार्यपीठ श्री ५ नवतनपुरी धामकी महिमा एवं गरिमासे अवगत हैं। इस परम पुनीत धर्मधराके विषयमें महामति श्री प्राणनाथजीने श्री तारतम सागरमें अनेक चौपाइयोंके द्वारा अपने उद्गार व्यक्त किए हैं। अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्माने '**सब विध वतन सहित**' यहीं प्रकट होकर इसे अपना विश्राम स्थल बनाया। इसलिए महामतिने कहा, '**उत्तम चौदे भवनमां, जिहां वालानो विश्राम**'। इस पावन पुरीमें श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके सभी उत्सव बहुत ही सुन्दर ढंगसे मनाये जाते हैं। जिससे धर्मप्रेमी सुन्दरसाथ धर्म एवं धामके प्रति जुड़े रहते हैं।

सुन्दरसाथजी, हम सभीको ज्ञात ही है कि महामति प्राणनाथजीका प्राकट्य श्री ५ नवतनपुरी धाममें हुआ था। अतः यहाँपर प्रति वर्ष उनके प्राकट्य उत्सव ही वार्षिक उत्सवके रूपमें दिव्यतापूर्वक मनाया जाता है। यह उत्सव किसी वर्ष त्रि-दिवसीय, किसी वर्ष पंच-दिवसीय तथा किसी वर्ष सप्त-दिवसीय होता है। श्री ५ नवतनपुरी धामके वार्षिक उत्सवके रूपमें मनाया जाने वाला यह महोत्सव चौदशके मेलेके रूपमें भी प्रसिद्ध है।

इस वर्ष श्री ५ नवतनपुरी धाममें श्री प्राणनाथ प्राकट्य महोत्सवका आयोजन कुछ विशिष्ट ढंगसे हुआ। श्री तारतम सागरके ३१३ पारायण तथा ३१३ राजभोगके साथ आयोजित यह महोत्सव अभूतपूर्व था। श्री कृष्ण प्रणामी धर्ममें ३१३ का महत्त्व है। श्री तारतम सागरके ३१३ पारायण एवं ३१३ राजभोगका आयोजन भी रहस्यपूर्ण है। हमें ज्ञात है कि निजानन्दाचार्य सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजने श्री ५ नवतनपुरी धाममें रहकर ३१३ ब्रह्मआत्माओंकी जागनी की थी। अतः उन ब्रह्मात्माओंकी संख्याके प्रतिक स्वरूप श्री तारतम सागरके ३१३ पारायण एवं ३१३ राजभोगका आयोजन यथार्थमें उन ब्रह्मात्माओंकी स्मृति बनाये रखनेके लिए था।

मंगल प्रारंभ : महाकवि कालीदासने मनुष्यको उत्सव प्रिय कहा है। हम उत्सवोंको अत्यन्त उमंग और उल्लासके साथ मनायें परंतु आध्यात्मिक भाव बिना मनाया गया उत्सव मात्र मनोरंजन कहलाता है । उत्सव अपने आपमें मंगलमय होता है और इसका प्रारंभ भी मंगलमय ही होता है ।

दिनांक १६ सितम्बरकी सुरम्य प्रभातमें ७:१५ बजे सुन्दर रूपसें सजाये गये पारायण मंडपमें ३१३ तारतम सागर पधराकर पूजन अर्चन और आरती की गई । पूज्यपाद आचार्य महाराजश्रीके साथ संतों और ब्रह्ममुनियोंने एक साथ आरती उतारी । असंख्य दीपकोंसे जगमगाता हुआ पारायण मंडप दिव्य और अलौकिक लग रहा था । निजनाम मंत्रके समूह जपके पश्चात् **श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज**के मुखारविंदसे पारायण प्रारंभ हुए । उस अवसर पर देश–विदेशसे पधारे हुए संतजन एवं विद्वद्जनोंमें श्री ५ पद्मावती पुरी धाम, श्री प्राणनाथ ट्रस्टबोर्डके अध्यक्ष **सन्त शिरोमणि स्वामी सदानन्दजी**

महाराज, श्री बाबा दयाराम धाम, करनालके गादीपति **श्री जगतराज महाराज**, श्री मंगलधाम कालेम्पोंगसे पधारे हुए **श्री मोहनप्रियाचार्यजी महाराज,** चेतनधाम गंगापुरके गादीपति **श्री नन्दकिशोरदासजी महाराज,** श्री कृष्ण प्रणामी मूलमिलावा मानव मन्दिरके अध्यक्ष **श्री तारतम ज्योतिजी महाराज,** मेरतासे **श्री हेमन्त भंडारीजी,** हरकुंडीके **श्री रश्मिभाई भट्ट,** इकदिल इटावासे **श्री परमानन्दजी,** सिलीगुडीसे **श्री हंसदाजी, पं.श्री लक्ष्मीकान्त शर्मा,** तथा **श्री नारायण स्वामी** सहित अनेक सन्तजन एवं श्री ५ नवतनपुरी धामके सेवाभावी ट्रस्टियोंकी विशेष उपस्थिति थी।

पूज्य आचार्य महाराजश्रीने प्रारंभिक उद्‌बोधनके पश्चात् प्रारंभकी १७ चौपाईयों श्री तारतम सागरके ३१३ पारायणके मंगल प्रारंभके साथ–साथ महामति श्री प्राणनाथजी प्राकट्य महोत्सवका भी मनोरम शुभारंभ हुआ।

सभाका शुभारम्भ : दिनांक १६ सितम्बर २००९ प्रात ९.०० बजे सिनगार आरती पश्चात् विशिष्ट सन्तजन, श्री ५ नवतनपुरी धामके सेवाभावी ट्रस्टीजन एवं अग्रगण्य सुन्दरसाथकी विशेष उपस्थितिमें **श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य जगद्‌गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराजने** अपने पवित्र कर कमलों द्वारा दीप प्राकट्य कर सभाका भव्य उद्घाटन किया। उद्घाटन पश्चात् सर्वप्रथम सामूहिक रूपमें मेहेरसागरका सस्वर पाठ **श्री मनीषानन्द शास्त्री**ने शास्त्रीय रागमें स्तुति गायन कर सभाको और सुरम्य बनाया। स्तुति बाद **परम पूज्य आचार्य महाराजश्री**ने वाणी चर्चा द्वारा सुन्दरसाथके जीवनमें प्रेमका महत्व एवं महामति प्राणनाथजीकी जीवनी पर सुन्दर प्रकाश डाला। पूज्य आचार्य महाराजश्रीके आशीर्वचन बाद **संत शिरोमणि स्वामी श्री सदानन्दजी महाराज, महन्त श्री जगतराज महाराज** तथा **श्री मोहनप्रियाचार्यजी**

महाराजने सुन्दर वक्तव्य प्रस्तुत किया। सभी सन्तोंने श्री ५ नवतनपुरी धामकी गरिमा, श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके सिद्धान्त एवं महामति प्राणनाथजीका धर्मके प्रति योगदान तथा उनकी जीवनीके ऊपर अधिक जोर देते हुए सुन्दरसाथको समझाया। बीच बीचमें महामतिकी वाणी, भजन, स्तुति एवं धून प्रस्तुत किए गए।

राजभोग : दिनांक १६ सितम्बरको पूर्व सुनियोजित कार्यक्रम अनुरूप अपराह्न ३.०० बजे राजभोगका भव्य आयोजन हुआ। श्री राजजी महाराजको समर्पित ३१३ प्रकारके अलग अलग मेवा मिष्टान्नयुक्त राजभोगके दर्शनार्थ हजारों सुन्दरसाथ घण्टों पूर्वसे ही पारायण मंडप एवं मन्दिर प्रांगण पर उपस्थित थे। ठीक ३.०० बजे श्री राज श्यामाजीके उठापन एवं श्री राजजीके अलौकिक दर्शनके साथ–साथ उनको समर्पित किये गये ३१३ राजभोग भी उसी समय सुन्दरसाथके दर्शनकके लिये खुल्ले कर दिये गये। उन मनोहर राजभोगके दर्शन कर सुन्दरसाथ अपने आपको अहोभागी समझ रहे थे। क्यों न हो यथार्थमें उस बख्तका नजारा ही कुछ और था। इसमें खास बात तो यह थी की ३१३ किलोका विशालकाय लड्डु भी बनाया गया था। जिसके दर्शन भी अलौकिक थे।

अपराह्न ४.०० बजे वाराणसीके भजन गायक श्री निपुर्ण झाने भजन गायन द्वारा सभाका प्रारंभ किया। उसके पश्चात् **शास्त्री श्री लक्ष्मण चैतन्यजीने** श्री कृष्ण प्रणामी धर्ममें वीतकका महत्त्व एवं महामति प्राणनाथजी प्राकट्य महोत्सवके विषयमें अपने सुन्दर वक्तव्य प्रस्तुत किया । फिर **श्री नारायण स्वामी, श्री तारतम ज्योतिजी महाराज, श्री हेमन्त भण्डारीजी** आदि महानुभावोंने प्रासंगिक उद्बोधन किया । अन्तमें **परम पूज्य आचार्य महाराजश्री**ने महामति श्री प्राणनाथजीकी चौपाइयोंका वर्तमान परिप्रेक्ष्यमें महत्त्व समझाते हुए उपस्थित सुन्दरसाथको आशीर्वाद प्रदान किया । अपने आशीर्वचनोंमें **'कृपा माफक करनी, करनी माफक कृपा'** इस चौपाई ऊपर सुंदर विवेचन करते हुये सुन्दरसाथजीको शास्त्रोंके साथ-साथ श्री तारतम सागरके उदाहरणों द्वारा भाव विभोर किया । सुन्दरसाथ भी उनकी विद्वतापूर्ण और ज्ञान गंभीर वाणीसे पूरी तरहसे भक्ति रसमें निमग्न होते हुये आनंदका अनुभव कर रहे थे ।

प्राकट्य आरती एवं ध्वजारोहण दर्शन : जिस पावन घड़ीकी प्रतीक्षा लाखों सुन्दरसाथ प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूपसे कर रहे थे आज वह पावन घड़ी आ पहुँची। दिनांक १७ सितम्बर प्रातः १०. बजे श्री प्राणनाथजी प्राकट्यकी घड़ी थी तो सभी सन्त गुरुजन एवं सुन्दरसाथ अतिशय हर्ष एवं उमंगसे परिपूरित थे । सर्वप्रथम पारायण मंडपमें पूज्य आचार्य महाराजश्री के साथ-साथ सन्त गुरुजन एवं सुन्दरसाथ सभी

पूजन एवं आरतीमें सम्मिलित हुए। वहाँकी विधि पूर्ण होते ही सभीकी चित्तवृत्ति अब प्राणनाथजीके प्राकट्य दर्शनकी ओर उमड़ पड़ी। पूज्य आचार्य महाराजश्रीकी अगुवाईमें सभी सन्त गुरुजन, ट्रस्टीजन एवं अग्रगण्य सुन्दरसाथने प्राकट्य आरतीके लिए पारायण स्थलसे मन्दिरकी ओर प्रस्थान किया। जहाँ प्राकट्य उत्सवके समय

गाए जाने वाली चौपाई **'योगमाया नो देह धरीने ....'** गाई जा रही थी तो दूसरी तरफ सुंदरसाथजी निज मंदिरका पर्दा खुलनेकी आतुरता पूर्वक राह देख रहे थे । ठीक १० बजे पर्दा खुलते ही सुन्दरसाथने उमंग सभर नारियल तोड़कर खुशी व्यक्त की । नगारा और घंटनादसे मंदिर परिसर गूंज उठा । सर्वप्रथम मन्दिरमें पुजारी श्री यमनाथ शास्त्री द्वारा की गई कर्पूर आरतिके पश्चात् श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य जगद्गुरु श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराजने महाआरती की, तत्पश्चात् उपस्थित संतोंमें संत शिरोमणि स्वामी सदानन्दजी महाराज, महन्त श्री जगतराजजी महाराज, श्री मोहनप्रियाचार्यजी महाराज, महन्त श्री नन्दकिशोरदासजी, स्वामी तारतम ज्योतिजी महाराज आदि संतोनें भावपूर्वक आरती की । तदुपरान्त श्री ५ नवतनपुरी धामके सेवाभावी ट्रस्टी श्री नवीनभाई परीख, श्री तुलसीदास ठक्कर, श्री मनसुखभाई संघाणी, शेठ श्रीकान्त रूपारेल, श्री हरिदासभाई सोंलकी, श्री भगवानभाई वसोया, श्री पुरुषोत्तमभाई पटेल, श्री

गिरधारी लाल तनेजा, अमीतभाई भावसार तथा अमेरिकासे पधारे हुए श्री हिमांशु पटेल आदि अग्रग्रण्य सुंदरसाथने आरतीका लाभ लिया। और सुंदरसाथजीने क्रमशः आरती उतारी और दर्शनका लाभ लिया। समस्त सुंदरसाथजीको श्री राजजीके दर्शन अच्छी तरहसे हो सके इसके लिए इसबार विशेष ध्यान दिया गया था ।

आरतीके बाद पूज्य आचार्य महाराजश्रीके साथ संतों, संस्थाके अग्रगण्य कार्यकर्ताओंने मंदिरके शिखर पर पहुँच कर कलश पूजन एवं अभिषेकके पश्चात् ध्वजारोहण किया। समग्र मंदिर परिसर **'श्री प्राणनाथ प्यारे की जय' 'नवतनपुरी धामकी जय'** आदि जय घोषसे गूंज उठा। नूतन ध्वजारोहणके दर्शन कर समस्त सुन्दरसाथजी हर्ष विभोर हो रहे थे।

शोभायात्राः दिनांक १७ सितम्बर २००९ अपराह्न ४ बजे श्री ५ नवतनपुरी धामसे विशाल शोभायात्रा निकली जो नगरजनोंको भक्तिके रंगमें रंगाती हुई आगे बढ़ रही थी। श्री प्राणनाथजीके प्राकट्य भूमि श्री प्राणनाथ मेडी मन्दिर होकर नगर परिक्रमा करती हुई सायं ७.३० बजे पुनः श्री ५ नवतनपुरी धामके पवित्र प्रांगणमे पहुँचकर यह भव्य यात्रा पूरी हो गयी। इस अलौकिक यात्रामें सर्वप्रथम श्री राजजीकी सेवाका दिव्यातिदिव्य श्रृंगारयुक्त रथ सुशोभित हो रहा था। उसके बाद पूज्य आचार्य महाराजश्रीका नयनरम्य रथ, विविध स्थानोंसे पधारे हुए विशिष्ट

संतोंके लिए सुन्दर रूपसे सजी हुई अनेक बग्गीयोंकी अतिशय सुन्दर व्यवस्था की गई थी। इसके साथ-साथ अलग-अलग ट्रेक्टरोंमें

श्री कृष्ण लीला तथा श्री प्राणनाथजीके जीवन दर्शनकी मूर्तियोँकी झांकियाँ शोभायात्राको और दिव्य बना रहीं थी। भिन्न भिन्न स्थानोंके वेन्ड् बाजा, विविध प्रकारकी रास मण्डली, श्री बाईजीराज महिला मंडल एवं विशाल संख्यामें सुन्दरसाथजी इस शोभा यात्रामें शामिल हुए थे । सर्वत्र जय जय कार और आनन्द उमंगसे सुन्दरसाथजी संगीतकी सूरावलीके साथ झूम रहे थे। महिलाएँ गरबामें और पुरुष रासमें आनन्द मग्न रहे थे। डी.जे साउण्ड सिस्टमके साथ झुमते हुए सुन्दरसाथ एवं भक्तजन कभी थकते नहीं थे। सम्पूर्ण नगरवासी शोभा यात्राके दर्शनके लिए अपने अपने घरके बाहर प्रतीक्षारत थे। नगरजन बड़ी बड़ी अट्टालिकाओंसे पुष्प वर्षा कर श्री कृष्ण कन्हैया लालकी जय ! इस प्रकारके जय घोषसे गगनको गुंजायमान कर रहे थे। इस समय ऐसा अनुभव हो रहा था मानों परमधाममें ही श्री राजश्यामाजीके साथ १२००० ब्रह्मप्रियायें सुखपालादिमें बैठ कर यात्रा कर रहीं

हो। इस प्रकार शोभायात्रा जब ५.३० को श्री प्राणनाथ मेड़ी मंदिर पहुँची वहाँपर पूजन, आरती और नूतन ध्वजारोहणके पश्चात् यह यात्रा पुनः शहरके मुख्य मार्गोंसे होती हई सायंके ७.३० बजे श्री ५ नवतनपुरी धाम पहुँची। यहाँ भी डी.जे साउण्ड तथा बेन्डके तालके साथ सुन्दरसाथने रास गरबाका खुब आनन्द लिया।

प्रतिदिन प्रातः ५.१५ बजे मंगला आरतीसे दिनका शुभारंभ होता था तो प्रातः ७.१५ बजे पारायण मंडपमें सामूहिक आरतीके पश्चात् पारायण पठन आरंभ किया जाता था। ८.०० से ९.०० बजे पर्यन्त जलपानकी व्यवस्था थी। ठीक ९ बजे पुनः सभा मंडपका कार्यक्रम प्रारंभ होता था। सभाका प्रारंभ प्रतिदिन श्री ५ नवतनपुरी धामकी संगीत मंडली तथा विभिन्न स्थानोंसे पधारे संगीतज्ञोंके भक्तिवर्धक भजन एवं धूनसे किया जाता था। तत्पश्चात् परम पूज्य आचार्य महाराजश्री ९.३० से १०.३० पर्यन्त श्री तारतम सागरका रस एवं आशीर्वाद दोनोंकी वर्षा धर्मपरायण सुन्दरसाथके ऊपर करते थे।

दिनांक १८ तथा १९ सितम्बरको श्री ५ महामंगलपुरी धामके **आचार्य श्री १०८ सूर्यनारायणदासजी महाराज**की सुन्दर उपस्थिति रही उन्होंने भी प्रासंगिक उद्बोधन कर सुन्दरसाथको आशीर्वाद प्रदान किया। उपरोक्त संत गुरुजनोंके अलावा दिनांक १६ सितम्बरसे २१ सितम्बर पर्यन्त सभामें समय सापेक्ष अपने वक्तव्य प्रस्तुत करने वालें श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके संतो एवं विद्वद् जनोंमें, श्री पद्मावती पुरी धामके ट्रस्टी **श्री कुंजविहारी दूबे**, सचीव **श्री रूपराज शर्मा**, श्री भद्रावतीपुरी–भरोडाके **श्री टहलकिशोरजी महाराज**, चेतनधाम गंगापुरके महन्त **श्री नन्दकिशोरदासजी महाराज**, इकदिल इटावाके **श्री परमानन्दजी**, सिलिगुडीके **श्री हंसदासजी**, श्री ५ नवतनपुरी धामके **श्री सुरेन्द्र शास्त्रीजी**, **श्री श्यामसुन्दर शास्त्री**, **श्री चन्दन शास्त्रीजी**, **श्री जनार्दन शास्त्रीजी**, **श्री रमणराज शास्त्रीजी**, **श्री तुलसी शास्त्रीजी**, **श्री तिलक प्रणामी**, श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर अहमदाबादके **श्री राजेन्द्र शास्त्रीजी**, श्री कृष्ण प्रणाी सेवाश्रम शामलाजीके **श्री पुरुषोत्तम शास्त्रीजी**, जयपुरके **श्री बनवारीलालजी**, करनालके **श्री प्रमोद सुधाकरजी**, दिल्हीके **श्री एच.के.एल आहुजाजी**, हरकुंडीके **श्री रश्मीभाई भट्ट**, श्री बाईजीराज आश्रम धोराजीकी **सुश्री भानु प्रणामी**, **सुश्री गीता प्रणामी**, श्री वृन्दावनके **श्री भवानीशंकरजी** तथा **श्री भूपालजी** आदि महानुभावों थे जिन्होंने श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके सिद्धान्त, श्री ५ नवतनपुरी धामकी

महिमा तथा महामति स्वामी श्री प्राणनाथजीकी जीवन चर्या ऊपर चर्चा करते हुए सुन्दरसाथको लाभान्वित किया ।

श्री ५ नवतनपुरी धामसे आमन्त्रित अन्य सन्तोंमें आर्ष विद्यामंदिर हिन्दू धर्म आचार्य सभाके महामंत्री **स्वामी श्री परमात्मानन्दजी**, श्री आनन्दबाबा सेवा आश्रम जामनगरके महन्त **श्री देवप्रसादजी महाराज**, श्री कबीर आश्रम जामनगरके महन्त **श्री रामेश्वरदासजी साहेब**, श्री स्वामीनारायण मंदिर जामनगरके कोठारी **स्वामी श्री चतुर्भुजदासजी** आदि विशिष्ट सन्तजनोंने समयानुकुल उपस्थित होकर धर्मचर्चा की ।

इसी तरह प्रतिदिन अनेक संगीतज्ञ महामतिकी वाणी, भजन, कीर्तन एवं अनेक प्रकारके धूनके द्वारा वातावरणको भक्तिमय बनाते थे । उनमेंसे प्रमुख रूपसे वाराणसीसे पधारे **डाँ राजेश्वर आचार्य, श्री मनीषानन्द शास्त्री, श्री निपूर्ण झा, पं श्री ज्ञानेन्द्र भारद्वाज, श्री निरञ्जन भंडारी**, हिसारकी **श्रीमति शशी मित्तल**, श्री ५ नवतनपुरी धामके **श्री राजीव लोचन, श्री प्रकाश शास्त्री, श्री कृष्ण शास्त्री, श्री नारायण शास्त्री, श्री सुनिल प्रणामी, श्री विधान प्रणामी**, बलसाडके **श्री कन्हैयालाल भावसार**, नडियादके **श्री चेतनमणिजी**, पोरबन्दरके **श्री केशुभाई पुरोहित** तथा **श्री ज्योति स्वरूपजी** आदि थे ।

इसी प्रकारके अनेक मनोहर कार्यक्रम पूरे दिन होते थे । सुन्दरसाथने भी उन सभी कार्यक्रमोंमें यथासम्भव उपस्थित होकर अपने जीवनको भक्तिमय बनानेका पूरा प्रयत्न किया ।

जामनगरके अग्रणी नागरिकजनोंने भी इस महोत्सवमें सम्मिलित होकर धर्मलाभ प्राप्त किया । उनमें जामनगरके संसद सदस्य **श्री विक्रमभाई माडम**, मेयर **श्री कनकसिंह जाडेजा**, डे.मेयर **श्रीमति रेखाबेन शर्मा**, जामनगर शहरी क्षेत्रकी **श्रीमति वसुबेन त्रिवेदी**, जामनगर ग्राम्य क्षेत्रके विधायक **श्री लालजीभाई सोलंकी**, कर्पोरेटर **श्रीमति शोभनाबेन व्यास, श्री मनीषभाई कनखरा**, शहेरके पूर्व विकाश मंत्री **श्री परमानन्द खट्टर**, पूर्व मेयर **श्री अविनाशभाई भट्ट, श्री मनोहरभाई झाला**, लोकप्रिय विल्डर्स **श्री निलेशभाई टोलिया**, गुरु गोविन्दसिंह अस्पतालके सुपरीटेण्डेन्ट **डॉ.व्यास**, लोकप्रिय बाल रोग विशेषज्ञ एवं समाज सेवक **डॉ. हरगोविन्दजी तन्ना**, नेशनल हाईस्कूल जामनगरके ट्रस्टी एवं उद्योगपति **श्री हरेन्द्रभाई भाडलावाला**, समर्पण

अस्पतालके सेवाभावी मेनेजिंग ट्रस्टी **श्री वस्ताभाई केशवाला, डॉ जोगिन जोशी** एवं **प्रो. श्री दिलीप आशर** आदि प्रमुख थे। जिनकी सेवा एवं समर्पणको ध्यानमें रखते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने सभीको शाल ओढ़ाकर श्री ५ नवतनपुरी धामका आशीर्वाद प्रदान किया।

वि.हि.प द्वारा पूज्य महाराजश्रीका सम्मान : विश्व हन्दू परिषदके प्रांत अध्यक्ष डॉ.जगदीशभाई ढोलकिया, अध्यक्ष श्री दिनेशभाई कनखरा, उपाध्यक्ष श्री अशोकभाई रसिया, श्री देवुभाई दवे–बजरंग दल, श्री अशोक भूतिया, एवं संपर्क प्रमुख श्री पाठक साहेब, आदिने पूज्य आचार्य महाराजश्रीका भव्य सम्मान किया।

आशीर्वाद : इस वर्ष आशीर्वादका कार्यक्रम कुछ विशेष था। पूज्य आचार्य महाराजश्रीने विचार किया की श्री ५ नवतनपुरी धामकी जिन्होंने वर्षोंसे निष्ठापूर्वक सेवा की है और कर रहें हैं उन्हें श्री ५ नवतनपुरी धामका आशीर्वाद प्रदान करें। सेवा कोई छोटी या बडी होती नहीं है सेवा तो सेवा होती है। अतः जिन्होंने अपनी शक्ति, समझ एवं समय अनुरूप सेवा की उन सभी सेवाभावियोंको पूज्य आचार्य महाराजश्रीने दिल खोलकर आशीर्वाद प्रदान किया। हमें ज्ञात है श्री राजजी महाराजकी असीम अनुकम्पासे पूज्य आचार्य महाराजश्रीने प्रतिदिन बढ़ते हुए सुन्दरसाथकी संख्या एवं समयको देखते हुए कि श्री ५ नवतनपुरीधामका परिसर विस्तृत कर मन्दिरका जिर्णोद्धार किया है। यह भगीरथ कार्य मात्र दो महीनेमें पूर्नकर एक उदाहरण प्रस्तुत किया गया। इसको सम्पन्न करनेमें जिन धर्मपरायण सेवाभावी सुन्दरसाथने पूज्य महाराजश्रीका यथासम्भव साथ निभाया तथा ३१३ पारायणके विशाल आयोजनको सफल बनानेमें जिन्होंने आर्थिक एवं शरीरिक सेवा प्रदान की उन सभीका सन्मान किया। महोत्सवमें अनेक समिति बनाकर कार्य विभाजन किया गया था उसमें निजमन्दिर, सेवापूजा, पारायण, आवास, भोजन, दानभेट काउन्टर, शोभायात्रा, सफाई, लाईट एवं पानी, साउण्ड सिस्टम, विडियो ग्राफिक, स्वास्थ्य, पार्किंग आदि विभागीय सेवाको अच्छी तरहसे निभाने वाले सभी सेवापरायण संतजन, सुन्दरसाथ एवं महानुभावोंको पूज्य आचार्य महाराजश्रीने सभामंडपमें शाल ओढ़ाकर ढेर सारा आशीर्वाद प्रदान किया।

रात्रिकालीन सभामें भिन्न भिन्न प्रकारके सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा सामूहिक

रास–गरबाका कार्यक्रम अत्यन्त सुन्दर होता था। जामनगरकी बालिकायें प्रतिदिन नयें नयें सांस्कृतिक कार्यक्रमका झलक दिखलाया करतीं थीं।

विमोचन कार्यक्रम : सुन्दरसाथ प्रति वर्ष प्राकट्य महोत्सवमें नयें साहित्यकी मांग करते हैं अतः इसको ध्यानमें रखकर श्री ५ नवतनपुरी धाम द्वारा प्रति वर्ष कुछ न कुछ नयी वानगी तैयार की जाती है। इस वर्ष खास करके जिज्ञासु सुन्दरसाथके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं अनमोल ग्रन्थ '**श्री तारतम सागर पदानुक्रम**' तैयार किया गया था। इसके साथ–साथ श्री कृष्ण प्रणामी धर्मकी प्रातः एवं सायं कालीन **सेवापूजाकी अडियो सी.डी** भी तैयारी की गई थी। इन दोनों अनमोल रत्नका विमोचन परम पूज्य आचार्य महाराजश्री, एवं आचार्य श्री १०८ सूर्यनारायणदासजी महाराजके करकमलोंसे हुआ। इसी समय श्री तारतम सागर पदानुक्रमके प्रकाशनके लिए आर्थिक अनुदान देनेवाले जयपुरके धर्मपरायण श्री प्यारालालजी प्रणामीकी धर्मपत्नी **श्रीमति सुदर्शनादेवी**को पूज्य आचार्य महाराजश्रीने शाल ओढाकर आशीर्वाद प्रदान किया।

पारायण पूर्णाहुति : दिनांक २२ सितम्बर २००९ के दिन प्रातः ६.००

बजेसे ही श्री ५ नवतनपुरी धामके संगीतकार भक्तिभावपूर्वक भजनादि

गायनकर पारायण मंडपको भक्तिमय बना रहे थे। सभी सुन्दरसाथ भी भजनके रंगमें रंगते हुए नाच गानका आनन्द उठा रहे थे। प्रतिदिनकी भांति ठीक ७.१५ बजे परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीका पारायण मंडपमें आगमन हुआ जहाँ पर सभी संतजन एवं विद्वद्‌जनोंकी भी सुन्दर उपस्थिति थी। पूज्य आचार्य महाराजश्रीके आगमन होते ही सुन्दरसाथमें कुछ और जोस, उत्साह एवं उमंग भर आया। सभीने जय जय कारके साथ महाराश्रीका स्वागत किया।

सर्वप्रथम परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने पारायण प्रारंभकी महाआरती की फिर पूर्णाहुतिके लिए आसन पर विराजमान हुए। उनके साथ उपस्थित सभी सन्तगुरुजन एवं ब्रह्ममुनि जन भी अपने–अपने स्थानमें बैठ गए। अन्तिमके दो प्रकरण पूज्य आचार्य महाराजश्रीके साथ–साथ सभीने सामूहिक पाठ कर पूर्ण किया। अन्तिमकी चौपाई पाठ होते ही सुन्दरसाथने जय जय कारके साथ नारियल तोड़ कर बधाई की। उसके बाद पूज्य आचार्य महाराजश्रीने **पर तोले न आवे एकने मुख श्री कृष्ण कहंत** का गायन एवं प्रारंभके १७ चौपाइयोंका पाठ कर समापन किया।

पूर्णाहुतिके अवसर पर आशीर्वाद प्रदान करते हुए पू. आचार्य महाराजश्रीने

अपने उद्बोधनमें कहा, मानव कल्याणके लिए निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज प्रदत्त तारतम महामंत्र एवं महामति श्री प्राणनाथजी महाराज प्रदत्त तारतम ज्ञान ये दोनों अमोघ साधन हैं। जिनके द्वारा हम साध्य पर्यन्त सरलतासे पहुंच सकते हैं। मानव मात्रका परम पुरुषार्थ परमात्मा प्राप्ति है। अतः महामति प्राणनाथजीके सदुपदेशको जीवनमें धारण करनेसे जीवन धर्ममय बनेगा एवं हमें आत्मा एवं परमात्माकी पहिचान होगी। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि आगामी २०१८ में महामति श्री प्राणनाथजीके प्राकट्यके ४०० वर्ष पूर्ण होंगे। इस अवसर पर श्री प्राणनाथ चतुर्थ शताब्दी महोत्सवका आयोजन श्री ५ नौतनपुरी धामके तत्त्वावधानमें किया जाएगा। इसके लिए अभीसे ही आप सभी अपनी तैयारीमें रहें। कार्यक्रमकी रूपरेखा और तिथिकी जानकारी भविष्यमें दी जाएगी। जिन ब्रह्ममुनियोंने पारायण पाठ किया और जिन कार्यकर्ताओंने विविध विभागोंको संभालते हुए अमूल्य सेवा प्रदान की, उन तमाम सुन्दरसाथको पूज्य आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद प्रदान किया। इस शुभ प्रसंग पर श्री ५ नवतनपुरी धामके सेवाभावी ट्रस्टीओंने पूज्य आचार्य महाराजश्री एवं अन्य सन्त गुरुजनोंको शाल व पुष्पहार पहनाकर सम्मान तथा अभिवादन किया।

अन्तमें श्री ५ नवतनपुरी धामकी सेवामें अहर्निश एक कर '**सेवा धर्म परम गहनो**' यह उक्तिको चरितार्थ करने वाले ट्रस्टके एक्जीक्यूटीव ट्रस्टी **श्री नवीनभाई परीख**ने भिन्न भिन्न स्थानोंसे पधारे सन्त गुरुजन, विद्वद्जन तथा धर्मपरायण सुन्दरसाथजीका आभार व्यक्त किया।

छठ्ठी उत्सव : दिनांक. २२ सितम्बर २००९ प्रातः ९.३० बजे पूर्णाहुति होते ही श्री प्राणनाथजीका छठ्ठी उत्सव भव्य रूपले मनाया गया। इस अवसर पर श्री राजजीकी सेवा अतिशय सुन्दर पालखीमों निजमंदिरसे मंदिरके

प्रांगणमें लायी गई । पूज्य आचार्य महाराजश्री, संतों, ट्रस्टीगण और सुंदरसाथजीने श्री राजजीकी पालखीको कंधेपर उठाते हुए आनंद उमंगके साथ परिक्रमा की । अन्दाजित १० हजारसे अधिक सुन्दरसाथकी संख्या होनेसे पालखी यात्रा अति भव्य लग रही थी । सुन्दरसाथकी भारी संख्याके कारण यात्रा अति मन्दगतिसे आगे बढ़ रही थी । निजमंदिरसे निकलकर मन्दिर परिक्रमा करते हुए पुनः निजमंदिरमें पहुचनेमें अन्दाजित १.३० घण्टेसे अधिक समय लगा । पालखीमें विराजमान श्रीराज श्यामाजीकी शोभाके दर्शन कर सुन्दरसाथजी अति प्रसन्न और आनंदित हो रहे थे । भजन, कीर्तन, रास, गरबा और भक्ति भावपूर्ण वातावरणमें सवारी पुनः मंदिरमें पधराकर आरती की गई ।

श्री प्राणनाथ प्राकट्य महोत्सवके प्रसंग पर अलग–अलग व्यवस्थाके लिए समितियाँ बनाई जाती है । इस वर्ष भी हरेक समितिने अपना–अपना कार्य खूब सुचारु रूपसे संपन्न किया भोजन–प्रसाद और आवास व्यवस्था भी खूब सुंदर ढंगसे की गई थी । इस प्रकार इस वर्षका महामति प्राणनाथ प्राकट्य महोत्सव खुब हर्षोल्लास और धुमधामसे मनाया गया । महोत्सवमें उपस्थित सुंदरसाथजीने दर्शन, सत्संग–प्रवचन और भक्ति भाव रूपी अमूल्य निधि प्राप्त कर हर्षित और गद्‍गद् हृदयके साथ अपने अपने गृहकी ओर प्रस्थान किया ।

महोत्सवान्तर्गत दिनमें सभामंडपका सञ्चालन **श्री लीलाधर शास्त्री** एवं रात्रिकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रमका संचालन **श्री कनकराय व्यास**ने अति कुशलतापूर्वक सुन्दर ढंगस किया ।

दिनांक १६ से १९ सितम्बर पर्यन्तके समग्र कार्यक्रमका सीधा प्रसारण आस्था चैनलके माध्यमसे हुआ । देश विदेशके लाखों सुन्दरसाथने घरमें बैठे बैठे भी यह पावन उत्सवका लाभ प्राप्त किया ।

सद्‍गुरु प्राकट्य महोत्सव : सुन्दरसाथजी निजानन्दाचार्य सद्‍गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजकी ४२८ वीं जयंती दिनांक २ अक्तूबर २००९ को बहुत ही उत्साह एवं उमंगके साथ मनाई गयी । श्री ५ नवतनपुरी धाममें श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके सभी उत्सव बहुत ही सुन्दर ढंगसे मनाये जाते हैं । सद्‍गुरु प्राकट्य उत्सव मनानेके लिए भी इस दिन नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रसे

सैकडों सुन्दरसाथ मन्दिरमें पहुँचे हुए थे । इस दिन प्रातः ३.०० बजेसे ही भजन–कीर्तन एवं धूनादिसे मंदिर परिसर भक्तिमय बन गया था । अन्तमें **'योगमायानो देह धरीने, श्री श्यामाजी थैया तैयार'** इस प्रकरणका सुन्दर गायन पश्चात् मन्दिरका परदा खुलते ही निजानन्दाचार्य सद्‌गुरु श्री देवचन्द्रजीकी जय जय कार एवं बधाई करते हुए अति सुन्दर ढंगसे इस उत्सको मनाया गया ।

शरद पूर्णिमा महोत्सव : प्रति वर्षकी भाँति इस वर्ष भी श्री ५ नवतनपुरी धाममें यह महोत्सव अत्यन्त हर्ष एवं उल्लासपूर्वक मनाया गया । यह उत्सव इस वर्ष दिनांक ३ अक्तूबर २००९ को था । इसमें श्री ५ नवतनपुरी धामके संतजन, सेवाभावी ट्रस्टीजन, जामनगर शहेरके निकटवर्ती एवं ग्रामीण क्षेत्रसे आये हुए हजारों सुन्दरसाथ सम्मिलित थे । रात्रि ९.०० बजेसे मध्यरात्रि ठीक १२.०० बजे पर्यन्त विभिन्न प्रकारके रास एवं गरबाका आनन्द लेते हुए सभीने शरद पूर्णिकाका खुब खुब आनन्द लिया । ठीक १२ बजे आरती पश्चात् प्रसाद ग्रहण कर सुन्दरसाथ एवं भक्तजनोंने अपने अपने स्थानको प्रयाण किया ।

प्रस्तुति : शास्त्री लक्ष्मण चैतन्य

पक्की रसोईकी सेवा

०१.	धा.वा. शिवाभाई मनजीभाई कोराट	राजकोट
०२.	धा.वा. मोहनभाई टपुभाई मुंगरा	जामनगर
०३.	श्रीमती गौरीबेन मूलजीभाई चांद्रा	जामनगर
०४.	धा.वा. धनजीभाई वीरजीभाई संघाणी	जामनगर
०५.	श्रीमती अम्बिकादेवी भवानीशंकर भट्ट	काठमांडौ (नेपाल)
०६.	धा.वा. रुक्मिणीबेन मोहनभाई भावसार	गणदेवी
०७.	धा.वा. कानबाई शिवरामभाई महेता	बगदरा
०८.	श्री बबाभाई नाथाभाई पटेल	मोयद
०९.	श्री हीरजीभाई गोविन्दभाई दुधागरा	वागडीया
१०.	श्री जीवीबेन मावजीभाई पटेल (आमोदरा)	
	ह. लीलाबेन बहेचरभाई पटेल	मोयद
११.	धा.वा. जशुबा चंदुभाई चूडासमा	जामनगर
१२.	रूकुदेवी डोटेल और रतिदेवी पौडेल	काठमाण्डौ (नेपाल)
१३.	धा.वा. साध्वी श्री जमुना माताजी	नवतनपुरी धाम
१४.	धा.वा. व्रजमाया श्रेष्ठ ह. श्री शंकरलाल श्रेष्ठ	काठमांडौ (नेपाल)

साहित्य सेवा

काठमाण्डौ निवासी धर्मपरायण श्री हरिशंकर श्रेष्ठजीके पिताजी श्री केशवलाल श्रेष्ठकी पुण्यतिथिपर परिवारजनोंने श्री ५ नवतनपुरी धाममें पक्की रसोईकी सेवा की । इसी उपलक्ष्यपर श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाकी साहित्य सेवामें रु.२५१/ प्राप्त हुए हैं । श्री राजजी महाराजकी कृपा सभीके ऊपर बनी रहे । धर्मके प्रति समग्र परिवार सदा आस्थावान रहें इन्हीं शुभकामनाओंके साथ श्री ५ नवतनपुरी धाम एवं पूज्य आचार्य महाराजश्रीका शुभाशीर्वाद ।

श्री प्राणनाथ प्राकट्य महोत्सवमें की गई प्राकट्यकी महाआरती

कलश महाअभिषेक एवं नूतन ध्वजारोहण करते हुए पू.आचार्य महाराजश्री

महोत्सवान्तर्गत आयोजित ३१३ राजभोग दर्शन

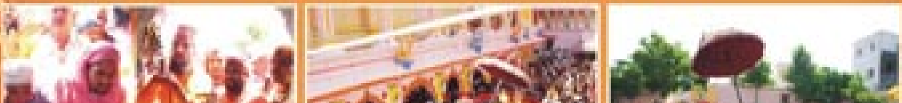

श्री प्राणनाथजीकी छट्ठी महोत्सवकी झांकी

रात्रिकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रमकी झलक

RNI No. GUJ BL /2006/16311 Registration No. GJN-1 / 2009-2011

श्री प्राणनाथ प्राकट्य महोत्सवमें आयोजित ३१३ पारायण पूर्णाहुतिके विविध दृश्य

महामति मंचका दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ करते हुए, पूज्य आचार्य महाराजश्री एवं अन्य सन्त गुरुजन

PRINTED BOOK

TO :

SHRI KRISHNA PRANAMI DHARMA PATRIKA
SHRI 5 NAVTANPURI DHAM JAMNAGAR - 361 001 (INDIA)